182
689
M
MICROFILM

* श्री *

राष्ट्रीय सुमन हार ।

पद्य कर्त्ता—

सीताराम पाठक विद्यार्थी ।

पुस्तक मिलने का पता:—

सीताराम पाठक

मु०—बरवली

पो० आ०—शादियावाद

जि०—गाजीपुर

पहलीबार] सन् १९३१ [मूल्य -)।

891.431 V59R
3
1K
NATIONAL ARCHIVES LIBRARY
No 689
Date 17:12:71
GOVT. OF INDIA

॥ गाना ॥

अब सबेरा हुआ हिन्द बीरो जगो,
तुम्हें गांधी जगाते सुनाता नहीं।
धिक है उस जवानी को वीरो
जामें बीरों का जोश भरा हो नहीं।
यह फैली हुई हिन्द में अग्नि जो
किहु भांति से बीरो बुझेगी नहीं।
जलायेगी यह तो सितमगर को
कोई खौफे खतर दिल में लाओ नहीं।
बस उठो बन के सैनिक ऐ बीरो,
"सीता" कहते हैं माता उबारो महीं॥

॥ गाना ॥

निशा अन्धेरी दूर हटाया,
वीरों के दिल को हरखाया।
इस तरल तिरंगे झंडे ने॥

सुख मार्ग हमें सिखलाया है,
वेदी बलिदान बताया है।
इस तरल तिरंगे झंडे ने॥
भारत की सुख नींद छुड़ाया,
भूले को चैतन्य कराया।
इस तरल तिरंगे झंडे ने॥
पराधीन बेड़ी यह तोड़ा,
"सीता" का उससे मुंह मोड़ा।
इस तरल तिरंगे झंडे ने॥

॥ गाना ॥

आज भगतसिंह हिन्द में निज नाम कर गया।
हंसते हंसते फांसी पर कुरबान हो गया॥
लार्ड इरविन न्याय नहिं अन्याय कर दिया।
शूर बहादुर भगत का खूंखार बन गया॥
शोक फैला हिन्द में सरदार चल गया।
फांसीका देना ज़ालिम को आसान हो गया॥

धन्य बहादुर भगतसिंह कुरबान हो गया।
बलिदान होना बीरों को आसान कर गया॥
अब भरतीयो उठ पड़ो बलिदान का समय।
ज़ालिम भी अपने सरको तलवार बन गया॥
कहते हैं 'सीताराम' भारत हो गया आजाद।
वेदी पर चढ़ने के लिये तैयार हो गया।

॥ गजल ॥

लड़ाई धर्म की लड़ते महाशय विजय पावेंगे।
शिकस्ते आज़मे ज़ालिम मज़ा मोहन चखावेंगे॥
जो भारत लाल रंगोंसे रंगा है पीत कर देंगे।
अजी वह हिन्द की पहली छटा फिरसे दिखादेंगे॥
उठो बीरो उठो बीरो शुभौसर फिर न पावोगे।
अमर निज नामको करलो न फिर नर जन्म पावोगे॥

॥ गाना ॥

हमारी दशा गिर गई हे मुरारी।
क्यों भूले हमें गिरवर गिरधारी॥

गुलामीकी जंजीर में आज जकड़े ।
उबारो उबारो हमें गिरधारी ॥
तुम्हें वेद गाते यही हैं बताते ।
कि दीनोंके भाई तुम्हीं गिरधारी ॥
ये भारत विना आपके रो रहा है ।
कहां छा रहे गिरवर गिरधारी ।
हमें शक्ति दीजे गुलामीको तोड़ें ।
चमन सा करें हिन्द हम गिरधारी ॥

॥ गज़ल ॥

हमारा देश था सुखसे भरा थी शांति सब छाई ।
न कोई देश ऐसा था जहां में कीर्ति बगराई ॥
शुभौसर आगया डूबा हुआ भारत उबारेंगे ।
नहीं अब मातृभूमी कष्टमें हम तुमको डारेंगे ॥
जो बीरोंका महा कर्तव्य अब तुमको दिखावेंगें ।
डिगेंगे काल से भी न मजा जालिम चखावेंगे ॥
चलो रणक्षेत्रमें बीरो शुभौसर फिर न आयेगा ।
मरेगा देश पर जो फिर नहीं नर जन्म पायेगा ॥

॥ गाना ॥

भारत में तेरे नाम को फिर से जगाऊंगा।
देशों में सर्व श्रेष्ठ मैं तुमको बनाऊंगा॥
कपड़े विदेशी मुल्क में आने न दूंगा मैं।
यहीं की वस्तुवों से कार्य सब चलाऊंगा॥
अपने करों के सूत का कपड़ा बुनाऊंगा।
पहनके सितमगरकी मिलोंको रुलाऊंगा॥
डूबा जो नाम हिन्दका 'सीता' उबार लूं।
तभी तो मातृ भूमि का प्यारा कहाऊंगा॥

॥ गजल ॥

ऐ नवजवान भाई भारत के बीरवर हो।
क्यों मुर्दनी है छाई दिल में नहीं खतर हो॥
किस तौरसे तुम्हारा यह राज्य छिन गया है।
अब उठ पड़ो बहादुर शुभकाल आगया है॥
अब हो गया सबेरा सुख नींद से उठो तुम।
निज आंख खोलो प्यारे भारत निहारलो तुम॥

नहिं जिन्दगी ठिकाना गर ध्यानमें जो लाओ ।
पानी का बुलबुला है कुछ कामकर दिखाओ ॥

॥ गजल ॥

अहो जगदीश दीनोंकी सदा सुधि लेतहो कैसे ।
पुकारूं हे प्रभो किसको नहीं हैं आप के ऐसे ॥
तुम्हींहो बन्धु पितु माता तुम्हींसे विश्वका नाता ।
उबारे गज उदधि डूबत उबारो हिन्द को तैसे ॥१॥

॥ गजल ॥

हिन्दूस्तान वाले क्या है दशा तुम्हारी ।
सब जग गये तुम्हीं पर छाई विपत्ति भारी ॥
माता विलाप करती मुख आसुओंसे धोती ।
हा सुत कहां छिपे हो हम होगई भिखारी ॥
निज दूध मैं पिलाया उपदेश नित सुनाया ।
सुत कर्म अब दिखाओ कर में धरो कटारी ॥
पर ध्यान सर्वदा हो गांधी का नाम गाते ।
हिंसा न हो हृदय में बलवीर कर्मचारी ॥

॥ गाना ॥

सितम हा सितम बीर सोये हुये हो।
औ ज़ालिम के यां सर झुकाये हुये हो॥
तुम्हें सोहता है नहीं बीर ऐसा।
शानो शौक़ अपनी गंवाये हुए हो॥
बने आलसी ज़र गया लूट सारा।
अब बेज़र बने कर बंधाये हुए हो॥
उठो जी उठो कसलो अबसे कमर को।
क्यों बुज़दिल बने सर गिराये हुये हो॥

॥ गाना ॥

ताड़ी के पीने वाले बरबाद हो रहे हो।
नर जन्म स्वच्छ जीवन धब्बा लगा रहे हो॥
राक्षस क्यों बन रहेहो मदिराके पीने वाले।
यह कर्म है असुर का मदिरा के पीने वाले॥
बुधि है बिनाश होती सुख नींदसे न आती।
धुनि जब लगे नशाकी हरि चर्चा भी न भाती॥

गांजा के पीने वाले क्यों धन लुटा रहे हो ।
करते फजूल खर्ची बरबाद हो रहे हो ॥
सोचो तो ध्यानसे तुम कितना लुटा रहे हो ।
आमद नहीं टके की बरबाद हो रहे हो ॥
गर भांति इस रहोगे "सीता" समझ पड़ेगी ।
होगे निदान वेज़र कहुँ भीख न मिलेगी ॥

॥ गाना ॥

(अन्य पद्य कर्त्ता)

थे हम भी कभी जां वाजे वतन
ऐ चर्ख हमें बरबाद न कर ।
ज़िन्दा हैं मगर ये ज़ीस्त नहीं
अब और सितम ईजाद न कर ॥
ज़र और जवाहर सारा लुटा
सब शान गई ना दार बने ।
फैशन पै लुटाते मुल्क का ज़र
नाशाद को क्यों तू शाद न कर ॥

जब गांधीजीने जोर दिया
जेलों के उधर दरवाजे खुले ।
हम आहो बुका से काम जो लें
देते हैं डपट फरयाद न कर ॥
गोलमेज़ का तोफ़ा दिया जो हमें
नादान खुशी से उछलने लगे ।
क्या जाल बिछाया हिकमत का
बातों में फकत आज़ाद न कर ॥
कांग्रेस ने जो देखा रंग बुरा
दिया डंका बजा आज़ादी का ।
हे कृष्ण मुरारी कर तू मदद
मज़लूम को अब वेदार न कर ॥
॥ गाना ॥
हिन्दोस्तां हा सितम क्या हुआ
फ़क़त नामो निशानी जहां में रही ।
और जवाहर से भरा
सारी दुनिया में तेरी बड़ाई रही ॥

मगर आज हा लोग भूखों मरें
पर विदेशी मटन चाय खाते यहीं ।
तुम्हारी समझ पर है पत्थर पड़ा
मेरी प्यारा ज़ुबां खोल कहती नहीं ।
खां न साहब बहादुर की पदवी दिये
भूल जाते मेरे सम कोई है नहीं ।
मरोगे अगर देश सेवा में तुम
होगा जग में दुबारा जनम ही नहीं ॥

॥ गाना ॥

होबै फकीर हो सुरजवा के कारन ।
कपड़ा विदेशी मोरे मन से उतर गइलैं,
जवने में झलकेला सारी शरीर हो सुरजवा०
तन की बेइज्जती मैं कहां तक बयान करू,
गुंडा निहारे तन गंगा के तीर हो सुरजवा के०
खद्दर की सारी मोके लाद बलमुवां रे,
जौने में आरी २ पड़ी है लकीर हो सुरजवा के०

तजिके सुराही पानी रहबे सिविरवा में,
पियबै जमुना जीकै निरमल नीर हो सुरजवा
के कारन ॥ होबै फकीर ॥

॥ गाना ॥

गले मिल जा हो हिन्दू-मुसलिम बिरादर।
बिना एकता हो रहा है निरादर॥
सदियों से लूटा अतुल धन खसूटा।
करो एकता हिन्दू मुसलिम बिरादर॥
निफ़ाक सागर दोनों को पिला के।
मजा कर रहा हम दोनों को लड़ा कर।
तुम्हारा हमारा वतन एक ही है।
मगर भूल जाते जेहालत में आकर॥
अजी हिन्दुओ तुम गले से लगा लो।
मुसलमां भी तेरे वतन के बिरादर॥
हमें औ तुम्हें एक ही ने बनाया।
भेजा खलक में हम-नशीं वो बना कर॥

तीसरा है चतुर फूट हम में लगा के।
जोरों हंस रहा तालियों को बजाकर॥
उठो जी २ मेरे भैया मुसलमां।
नफ़रत न करो हम भी तेरे बिरादर॥
उठा लो अहिंसा कटारी करों में।
करो जंग खम ठोक कर हे विरादर॥

॥ गाना ॥

विद्यार्थियों एक दम जाँ लड़ाओ।
उठो जी उठो कर्म सुत का दिखाओ॥
अजी तेरी माता रुदन कर रही है।
तुम्हें याद करती दरद को हटाओ॥
रखो ताक में बीर अपनी किताबें।
बनो कर्मचारी गुलामी हटओ॥
महाराज गान्धी वो तैयब तुम्हारे।
हैं बुजरुग उठे कुछ जवानी दिखाओ॥
भगतसिंह दिया छोड़ बी. ए. परीक्षा।
मरा देश कारन ज़रा ध्यान लाओ॥

अधिक क्या कहूँ आप तो खुद समझते ।
बिनय है यही जान कुरबाँ कराओ ॥

॥ चेतावनी ॥

उठो बहादुर उठो बहादुर
सुराज का दिन करीब आया ।
न आंख से निज बहाओ आंसू
सुराज का दिन करीब आया ॥
कमसिन लड़के से सिन रशीदे
सदा निकलती सुराज लेंगे ।
तो फिर बहादुर क्यों सोचते हो
सुराज का दिन करीब आया ॥
उठा अहिंसा कटार कर में
ख़तम करो यह क़फ़स गुलामी ।
इक बार बाज़ू को फड़ फड़ाओ
सुराज का दिन करीब आया ॥

॥ गाना ॥

तेरा जवाल आया चल जा वतन सितमगर।
अब याँ गुज़र न होगी चल जा वतन सितमगर॥
तेरा वतन क़दीमी तुमको बुला रहा है।
चिल्ला रही हैं मीलें चल जा वतन सितमगर॥
भारत के कोने२ स्वाधीन वीण बजती।
तुमको चेता रही है चल जा वतन सितमगर॥
राजा से रंक होते निरधन से राव होते।
बदला ज़माना भारत चल जा वतन सितमगर।

IMPERIAL RECORD
RECEIVED.
14 DEC. 1931
DEPT.